अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2024) दिनांक : 18.12.2024

समय सीमा : 3 घंटा षष्ठम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

गतागत–40

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर लिखें (आगति व गति–कितनी व कहां-कहां से)– 24

(क) केवलज्ञानी में।

(ख) स्त्रीवेद एवं नपुंसक वेद में।

(ग) हरिवास, रम्यक् वास के यौगलिक में।

(घ) अवधिज्ञान में।

(ड़) समुच्चय वैक्रिय शरीर में।

(च) बाल वीर्य में।

(छ) कृष्णपक्षी में।

(ज) साधु में।

(झ) सातवीं नरक में।

(ञ) श्रावक में।

प्र. 2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 16

(क) तेजोलेश्या वाले तेजोलेश्या में जाए तो आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?

(ख) ज्योतिष्क एवं प्रथम देवलोक में आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?

(ग) पृथ्वी, पानी व वनस्पति में आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?

(घ) सम्यग् दृष्टि में आगति व गति कितनी व कहां-कहां से?

(ड़) जीव के 563 भेदों में मनुष्य तथा देवता में जीव के कितने भेद हैं? विस्तार से लिखें।

कायस्थिति–40

प्र. 3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें– 30

(क) सूक्ष्म काल पुद्गल परावर्तन किसे कहते हैं?

(ख) पंचेन्द्रिय की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ग) बादर निगोद की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(घ) सकाय की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ड़) मति अज्ञानी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(च) स्त्रीवेदी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(छ) मनयोगी और वचनयोगी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखते हुए बताएं कि उत्कृष्ट कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

(ज) तेजोलेश्यी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा उत्कृष्ट कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

(झ) चक्षु दर्शनी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा उत्कृष्ट कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

(ञ) क्षायिक सम्यक्त्वी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा उत्कृष्ट कायस्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

(ट) काय परीत की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा उत्कृष्ट कायस्थिति किस प्रकार घटित होती है?

(ठ) संयतासंयति की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें तथा जघन्य स्थिति किस अपेक्षा में ली गई है?

प्र. 4 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) सयोगी की अनादि अनंत और अनादि सांत स्थिति किस अपेक्षा से है?

(ख) चतुरिन्द्रिय पर्याप्त की कायस्थिति कितनी है?

(ग) त्रसकाय में पर्यात की कायस्थिति कितनी है?

(घ) तिर्यंच की एक भव की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी हो सकती है?

(ड़) सूक्ष्म संपराय चारित्र की जघन्य कायस्थिति एक समय किस अपेक्ष से ली गई है?

(च) सास्वादन सम्यक्त्वी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(छ) कापोतलेश्यी की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी एवं किस अपेक्षा से है?

(ज) अचरम की कायस्थिति लिखें।

(झ) अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति लिखें–उत्कृष्ट कायस्थिति किस अपेक्षा से है?

(ञ) पुद्गल परावर्तन की कितनी वर्गणाओं का ग्रहण और परित्याग होता है?

(ट) साकारोपयोग की जघन्य स्थिति किस अपेक्षा से ली गई है?

(ठ) पहले देवलोक की परिगृहित एवं अपरिगृहित देवियों की स्थिति कितनी है?

गीतिका (पांचों वर्षों की)–20

प्र. 5 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 4

(क) विराधक किसे कहते हैं? विराधक आराधक कैसे बन सकता है?

(ख) दसवें गुणस्थान में कितने व कौन-कौन से कर्मों का बंध होता है?

(ग) सावद्य व निरवद्य कार्य में क्या होता है?

(घ) चक्रवर्ती सनत्कुमार कितने देशों का स्वामी था?

(ड़) दस दान में कितने दान भगवान की आज्ञा में है और कितने आज्ञा के बाहर है?

(च) देश मोहनीय कर्म का उपशम निष्पन्न भाव किन-किन गुणस्थानों में होता है?

प्र. 6 किन्हीं चार पद्यों को अर्थ सहित लिखें– 16

(क) इग्यारमें.....मांयो रे।

(ख) मोह कर्म.....समाधो रे।

(ग) जिण घट.....अन्धकार।

(घ) छः काय.....आय ए।

(ड़) आंबा.....तणी ए।

(च) बंध मोख.....भरमाई रे।